प्रेस विज्ञप्ति

आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति

सरदारशहर 331 401

Email : terapanthpr@gmail.com * Fax : 01564-220 233

कोलकाता के शिष्ट मण्डल ने अपनी अर्ज प्रस्तुत की

अप्रमत व्यक्ति अमरत्व को प्राप्त करता है – आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 13 जून, 2010

आचार्य महाश्रमण ने चौरड़िया प्रशाल में धर्म सभा को संबोधित करते हुए कहा कि जो व्यक्ति मूर्च्छित रहता है वह अजागरूक होता है उसे भय सताता है। जो व्यक्ति मूर्च्छित नहीं होता वह व्यक्ति चाहे किसी क्षेत्र में काम करे उसे भय नहीं सताता है।

आचार्यश्री महाश्रमण ने आगे कहा कि प्रमत व्यक्ति मरे हुए के समान है और अप्रमत व्यक्ति अमरत्व के समान है, साधु ने यदि वेश धारण कर लिया किंतु साधना पद्धति का वेश धारण नहीं किया उसमें साधुत्व के प्रति आस्था और समर्पण का भाव न हो तो साधुत्व में प्राणवत्ता नहीं हो सकती और जिसमें पूर्ण समर्पण का भाव है तो उसमें प्राणवत्ता आ जाती है। उन्होंने कहा कि साधु के लिए अप्रमत की अपक्षा है अप्रमत रहने का प्रयास करना चाहिए, काम, अर्थ के प्रति मूर्च्छित नहीं होना चाहिए।

आचार्यश्री महाश्रमण ने यह भी कहा कि आत्मा की दृष्टि से मोह हानिकारक है। उन्होंने कहा कि धन के प्रति कभी ज्यादा मोह नहीं करना चाहिए, धन का कभी अहंकार नहीं करना चाहिए और धन का कभी दुरूपयोग नहीं करना चाहिए।

इस अवसर पर कोलकाता से समागत शिष्ट मण्डल ने अपनी अर्ज प्रस्तुत की जिसमें कोलकाता में चातुर्मास कर रही साध्वीकनकश्री के पत्र का वाचन मुनि कुमार श्रमण ने किया, मुनि योगेश कुमार ने भी अपनी जन्मभूमि कोलकाता की तरफ से अपने विचार प्रस्तुत किये।

तरूण सेठिया, कमल दूगड़, सुरेन्द्र बोरड़, सुरेन्द्र दुगड़, प्रकाश चिण्डालिया, प्रदीप सिंघी आदि शिष्ट मण्डल द्वारा कोलकाता पधारने की अर्ज के प्रत्युतर में आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि पूर्व में मैंने कहा था कि जब कभी दूर की यात्रा होगी तो उसमें सबसे पहले पूर्वांचल की यात्रा होगी जिसमें कोलकाता आदि है लेकिन उससे पहले मेरा विचार है कि मैं पहले संघ के बड़े हिस्से से मिलूं, अभी मैं चिंतन की गति में हूं आप लोगों को प्रतिक्षा करनी चाहिए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार ने किया।

एनिग्मा ऑफ द युनिवर्स का लोकार्पण कल

सरदारशहर 13 जून, 2010

आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में आयोजित एक विशिष्ट कार्यक्रम में प्रोफेसर मुनि महेन्द्र कुमार द्वारा लिखित एनिग्मा ऑफ द युनिवर्स पुस्तक का लोकार्पण। 14 जून को प्रात: 9 बजे चौरड़िया प्रशाल में निर्मित प्रवचन पण्डाल में किया जायेगा। प्रोफेसर मुनि महेन्द्र कुमार विज्ञान और आध्यात्म के समन्वय पर विशेष शोध कर रहे हैं। उनके द्वारा लिखित पुस्तकें उनकी विद्वता और विषय की पकड़ को परिभाषित करली है। मुनि महेन्द्रकुमार अपनी नव प्रकाशित कृति एनिग्मा ऑफ न युनिवर्स की प्रथम कृति आचार्य महाश्रमण को लोकार्पण हेतु समर्पित करेंगे।

शीतल बरड़िया
(मीडिया संयोजक)

शीतल बरड़िया
(मीडिया संयोजक)